Journal *de* Brahmavart
Volume one ,Issue one
ISSN 2394- 6326

Quarterly Published by
Brahmavart Research Institute
7A/1 Aman Patel Complex
Vishnupuri Kanpur U.P. India

pUnsydkyhu nqxZ fuekZ.k

डॉ.शशिशेखर मिश्रा

प्रवक्ता इतिहास

डॉ.आर.पी.रिछारिया डिग्री कॉलेज

बरुआ सागर झाँसी

बाँदा में चन्देल सत्ता के विस्तार ने दुर्ग निर्माण की परम्परा में उल्लेखनीय परिवर्तन किया। प्रारम्भ में गुर्जर–प्रतिहार (कन्नौज) सत्ता के सामन्त रहे। चन्देलों ने बुन्देलखण्ड के क्षेत्र में जिस दुर्ग निर्माण परम्परा की नींव डाली, वास्तविक रुप से आज भी मौजूद किलों में उन्हें सबसे प्राचीन कहा जा सकता है। चन्देलों ने दुर्ग के जिस महत्व को स्वीकार किया, वह आने वाले कालखण्डों में गहराता चला गया। परिणामतः चन्देलों के साथ तत्कालीन शासन सत्ताओं ने तथा आने वाली शासक पीढ़ियों ने दुर्ग निर्माण को सत्ता, युद्ध और स्वाभिमान का प्रतीक स्वीकार कर लिया। अतः ज्ञात ऐतिहासिक स्रोतों के आधार पर यदि चन्देलों को बाँदा (बुन्देलखण्ड) में प्रथम दुर्ग शिल्पी कहा जाय तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। कुछ विद्वानों की दृष्टि में चन्देलों ने लगभग दो दर्जन दुर्गों का निर्माण किया अतः चन्देल काल को यहाँ दुर्ग निर्माण काल कहा जाना चाहिये।[24]

चन्देल तथा कालान्तर में उनके आधीन अथवा समकालीन शासकों ने दुर्ग निर्माण की परम्परा में भौगोलिक, राजनैतिक तथा सामरिक तथ्यों का जिस प्रकार से ध्यान रखा है, वह आश्चर्यजनक लगता है। दुर्ग स्थिति, दृढ़ता, अगम्यता एवं वास्तुशिल्प की अनोखी सूझ जो चन्देलों ने प्रस्तुत की वह लम्बे समय तक यहाँ की दुर्ग निर्माण कला की परम्परा में बनी रही।[25]

चन्देल काल में चन्देलों के अतिरिक्त प्रारम्भिक युग में चेदि, परिहार, कलचुरि एवं बाद में उत्तर चरण में गोंड एवं मुस्लिम शासकों के द्वारा भी निर्मित किये हैं।

v"V nqxZ %

---

24 राय, बी. एन., 'कालंजर : ए हिस्टोरिकल एण्ड कल्चरल प्रोफाइल', इतिहास विभाग, पं. जे. एन. कॉलेज, बाँदा, 1992, पृ. 17.

25 सिंह, राजेन्द्र, 'बुन्देलखण्ड ए ट्रेडीशनल लैण्ड ऑफ फोर्ट काम्पलेक्स', द डेकेन ज्योग्राफर, वाल्यूम–32, न. 2, पुणे, 1994, पृ. 4.

चन्देलों के द्वारा निर्मित दुर्गों की संख्या अधिकांश विद्वानों ने सामान्यतः 08 मानी है, इसलिये इन्हें अष्ट दुर्ग कहा जाता है। इसके अतिरिक्त 21 स्कन्धवार को भी स्वीकार किया जाता है। उल्लेखनीय है कि 08 दुर्गे के नामों पर तथा 21 स्कन्धवारों की संख्या पर विद्वानों में सहमति नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि कुछ स्थानों को अधिक अथवा कम महत्व देने के कारण विद्वानों के विचारों में यह अन्तर दिखायी पड़ता है। डॉ. अयोध्या प्रसाद पाण्डेय ने चन्देलों के 08 दुर्गों में कालिंजर, अजयगढ़, मड़फा, मनियागढ़, कालपी, महोबा, हटा और गढ़ा को स्वीकार किया है।[26] जबकि गोरेलाल तिवारी का मानना है कालिंजर, अजयगढ़, बारीगढ़, मनियागढ़, मड़फा, मौदहा, कालपी, देवगढ़ ही अष्ट दुर्ग है।[27] डॉ. एस. के. मित्रा अष्ट दुर्गों में मड़फा, कालिंजर, अजयगढ़, महोबा, वारिदुर्ग (बारीगढ़), खर्जूरवाटक (खजुराहो), कीर्तिगिरि दुर्ग (देवगढ़) तथा गोपगिरि (ग्वालियर) को सम्मिलित करते है।[28] डॉ. वी. एन. रॉय डॉ. रामशरण शर्मा के विचारों से सहमति जताते हुये स्पष्टतः केवल 07 दुर्गों के नाम – खजुराहो, वारिदुर्ग, अजयगढ़, कीर्तिगिरि दुर्ग, गोपगिरि, कालिंजर, सोंढ़ी पर अपना मत प्रस्तुत करते है।[29]

यदि उपर्लिखित विद्वानों की सूची को संयुक्त रूप से सुमेलित कर लिया जाय तो इन दुर्गों की संख्या 14 निकलती है, जिनकी सूची इस प्रकार है। कालिंजर, अजयगढ़, मड़फा, मनियागढ़, कालपी, महोबा, हटा, गढ़ा, वारिदुर्ग (बारीगढ़) खजुराहो, देवगढ़, मौदहा, गोपगिरि, सोढ़ी।

यह भी स्मरणीय है कि मदनपुर, बिलहरी, सिरसागढ़ तथा रसिन जैसे दुर्गों को भी विद्वतजन चन्देल दुर्ग ही मानते है। यह भी उल्लेखनीय बिन्दु है कि विद्वानों की इन सूचियों में केवल कालिंजर और अजयगढ़ दो ही दुर्ग ऐसे है जो निर्विवाद रूप से सभी सूचियों में स्वीकार्य है। यह विश्लेषण इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि कालिंजर दुर्ग और अजयगढ़ दुर्ग निश्चित रूप से उस काल में अत्यधिक महत्ता को प्राप्त कर चुके थे। अतः इन दोनों महत्वपूर्ण दुर्गों के साथ कुछ चन्देलकालीन दुर्गों का संक्षिप्त विवरण यहाँ समीचीन होगा।

1- dkfy tj nx %

मत्स्यपुराण में कालंजर को देश तथा महाकाल (शिव) वन बताया गया है। विष्णु पुराण में मेरुपर्वत के मूल में कालंजर पर्वत की स्थिति बतायी गयी है। उसके पास हिमालय का वर्णन हुआ है तथापि इसे हिमालय पर मानना उपयुक्त नहीं होगा। यह वही बाँदा के पास का पौलिन्द कालंजर है।

तत्रैव दिमवत्पृष्ठे त्वट्टहासो महागिरिः।
भविष्यति महातेजाः सिद्धचारण सेवितः।।192
तत्रापि मम ते पुत्रा भविष्यन्ति महौजसः।
युस्वात्मानो महासत्वा ध्यानिनो नियतव्रताः।।193
सुभन्तुर्बबरिर्विद्वान् सुबन्धुः कुशिकन्धरः।
प्राप्य माहेश्वरं योगं रूद्रलोकाय ते गताः।।194
एकविशे पुनः प्राप्ते परिवर्ते क्रमेण तु।

---

26 पाण्डेय, ए. पी., 'चन्देलकालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास', हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1968, पृ. 215.
27 तिवारी, गोरेलाल, पूर्वोधृत, पृ. 59.
28 मित्रा, एस. के., 'द अर्ली रूलर्स ऑफ खजुराहो', कलकत्ता, 1958, पृ. 6.
29 राय, बी. एन., पूर्वोधृत, पृ. 17.

वाचस्पतिः स्मृतो व्यासो यदा स ऋषिसत्तम्ः।।195
तदाप्यहं भविष्यामि दारन्को नाम नामतः।
तस्माद् भविष्यते पुण्यं देव दास्वनं महत्।।196
तत्रापि मम ते पुत्रा भविष्यन्ति महौजसः।
प्लक्षो दाक्षायणिश्चैव केतुमाली वकस्तथा।।197
योगात्मानो महात्मानो नियता ह्यूर्ध्वरेवसः।
परमं योगमास्थाय रुद्रं प्राप्तास्तेदानधाः।।198
द्वाविंशे परिवर्ते तु व्यासः शुक्लायनो यदा।
तदाप्यहं भविष्यामि वाराणस्यां महामुनिः।।199
नाम्ना वैलाङली भीमो यत्र देवाः सवासवाः।
द्रक्ष्यन्ति मां कलौ तस्मिन्नवतीर्णो हलायुधम्।।200
तत्रापि मम ते पुत्रा भविष्यन्ति सुधार्मिकाः।
तुल्यार्चमेधुपिङक्षः श्वेतकेतुस्तधैव च।।201[30]
तेऽपि माहेश्वरं योगं प्राप्य ध्यानपरायणाः।
विरजा ब्रह्मभूपिष्ठा रुद्रलोकाय संस्थिताः।।202
परिवर्ते त्रयोविंशे तृणबिन्दुर्यदा मुनिः।
व्यासो भविष्यति ब्रह्मा तदाहं भविता पुनः।
श्वेतो नाम महाकायो मुनिपुत्रः सुधार्मिकः।।203
तत्र कालं जरिष्यामि तदा गिरि व रोत्तमे।
तेन कालंजरो नाम भविष्यति स पर्वतः।।204[31]

भारतीय जनता तीर्थस्थानों को नही भुलाती। वह गुप्त तीर्थस्थानों का पता लगाकर अपनी श्रद्धा–भक्ति प्रदर्शित करने लगती है। हिमालय–कर्णिका में विद्यमान कालंजर को जनता ने तीर्थस्थान के रूप में कभी नहीं जाना। वह प्रायः शुद्ध पर्वत के रूप में वर्णित मिलता है।

बाँदा में निश्चित रूप से कालिंजर दुर्ग को इसका सबसे उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण दुर्ग कहा जाना चाहिये। इस दुर्ग के वैभवकाल के 600 वर्षों के इतिहास में उत्तर भारत का ऐसा कोई महत्वाकांक्षी युद्धप्रिय शासक नहीं हुआ जिसने इस दुर्ग की प्राचीरों से अपना मस्तक न टकराया हो। वस्तुतः बाँदा (बुन्देलखण्ड) के इतिहास का साक्षी कालिंजर दुर्ग यहाँ का गौरव स्तम्भ है, जिससे शासक पीढ़ियाँ प्रेरणा लेती रही। 'कालिंजराधिपति' की दुर्दमनीय उपाधि प्राप्त करने के लिये न जाने कितने शासको की इच्छाशक्ति का इसने परीक्षण किया है। आल्हखंड में "किला कालिंजर का जाहिर है, मनियादेव महोबे क्यार" कह कर इसकी प्रशंसा की गयी है।

कालिंजर महाकाव्य काल से प्रसिद्ध तीर्थ का स्थान प्राप्त कर चुका था। इसका उल्लेख महाभारत,[32] भागवतपुराण,[33] हरवंश पुराण[34], ब्रह्मपुराण[35], में प्राप्त होता है। पुराणों में

---

30 कालंजरान विकर्णाश्च कुशिकान् स्वर्ग भौमकान् – मत्स्यपुराण 121/54.
'अमरं च महाकालं तथा काया वरोहणम्' – मत्स्यपुराण 18/26.

31 वायुपुराण 23/192–204.

32 महाभारत, पूर्वोधृत, वन पर्व, श्लोक 56–57.

33 भागवत पुराण, श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, 1906, षष्ठ स्कन्ध, श्लोक 20–21.

34 हरवंश पुराण, श्री वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई, 1906, पर्व–1, अध्याय–21, श्लोक–24–26.

35 ब्रह्मपुराण क्षेमराज श्री कृष्णदास, बम्बई, 70/16–18.

कालिंजर का नामकरण[36] स्थिति[37], तीर्थ[38], क्षेत्र[39] आदि के बारे में जानकारी मिलती है। कालिंजर जो प्रारम्भ में धार्मिक क्षेत्र तथा तीर्थ था, महाभारत में 'लोक विश्रुत' की संज्ञा से अभिहित किया गया है।[40] कालक्रम में धार्मिक महत्व का केन्द्र कालिंजर राजनीतिक सत्ता का केन्द्र बना।[41]

कालिंजर का तत्कालीन वृहद् मार्ग (कौशाम्बी से उज्जयिनी) पर उपस्थित होना तथा भारत के हृदय क्षेत्र में स्थित होना सम्भवतः वे कारण है जिन्होंने इस स्थान को राजनीतिक तथा सामरिक महत्व प्रदान किया और इसी कारण कालिंजर को दुर्गयुक्त किया गया। निश्चय ही यह दुर्ग समय–समय निर्मित, विस्तृत तथा पुननिर्मित होता रहा। विभिन्न स्थलों से प्राप्त कालिंजर के उल्लेख, शिलालेख तथा दुर्ग से प्राप्त मूर्तियाँ, सिक्के आदि इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं कि कालिंजर दुर्ग का निर्माण एक आकस्मिक घटना न होकर एक सतत् प्रक्रिया रही है। सम्भवतः इसी कारण से इस दुर्ग के निर्माता को निश्चित तौर पर नहीं बताया जा सकता। कालिंजर दुर्ग सागर तल से लगभग 375 मीटर ऊँचाई पर तथा सामान्य धरातल से लगभग 278.4 मीटर की ऊँचाई पर निर्मित है। कालंजर नामक पहाड़ी जिसका पृष्ठभाग हल्के उतार–चढ़ाव वाले ढ़ालों के साथ लगभग 6 से 8 कि.मी. दीर्घ वृत्ताकार है, पर यह दुर्ग निर्मित है। इस किले की लम्बाई पूर्व–पश्चिम 1.6 कि.मी. तथा चौड़ाई उत्तर दक्षिण 0.80 कि.मी. है। कालिंजर पहाड़ी का क्षेत्रफल लगभग 2850 हेक्टेयर है। यह विशाल दुर्ग सैन्य सुरक्षा, आक्रमण, रक्षण आदि के लिये अद्वितीय स्वीकार किया गया है। चन्देलों के पूर्व कलचुरियों,[42] गुर्जर प्रतिहारों,[43] एवं राष्ट्रकूटों[44] के अतिरिक्त पाण्डुवंशी उदयन[45] ने यहाँ अधिकार किया। कलचुरि शासकों की 'कालिंजरपुरवराधीश्वर' की उपाधि यह संकेत करती है कि कालिंजर की गणना श्रेष्ठ नगरों में थी तथा इसके शासकों को इसके अधिपत्य पर गर्व था। विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर यह निश्चित किया जा सकता है कि दुर्ग का निर्माण प्रथम शताब्दी ई. से छठी शताब्दी ई. के मध्य हुआ। छठी शताब्दी तक दुर्ग ख्याति प्राप्त कर चुका था तथा राजनीति का केन्द्र बन चुका था।[46] कुछ विद्वान कालिंजर दुर्ग की स्थापना का श्रेय चन्देल वंश के आदि पुरुष चन्द्रवर्मन को देते हैं, परन्तु अभिलेखीय साक्ष्यों से इसकी पुष्टि नही होती है। अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कालिंजर दुर्ग चन्देलों के पूर्व विद्यमान था।[47] तथा सर्वप्रथम

---

36 वायुपुराण सम्पादक – राजेन्द्र लाल मित्रा, कलकत्ता, 1880, 23/204 श्लोक तत्रः कालंजरभामि तदा गिरिवरोत्तमें, तेन कालंजरोनाम भविष्यतिसः पवर्तः।।

37 वामन पुराण, सम्पादक – हषीकेश शास्त्री, गिरीश विद्या रत्न प्रेस, कलकत्ता, 76/14.

38 पद्मपुराण, सम्पादक, विष्णु नारायण, पूना, 1893, भूमि खण्ड, 91/36 तथा महाभारत, पूर्वोधृत अनुशासन पर्व, 13–26–33.

39 पद्मपुराण, पूर्वोधृत, 90/34.

40 महाभारत, पूर्वोधृत, आरण्यक पर्व, 3/83/53 ततः कालंजरं गत्वा पर्वत लोक विश्रुतम् ततृ देवहृते स्नात्वा गोसहस्त्र फल लभेत।

41 सिंह, राजेन्द्र 'कनवरजन ऑफ तीर्था इन टू सेन्टर ऑफ पोलिटिकल एलीट – ए जियो कल्चरल स्टडी ऑफ कालिंजर', अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनार में प्रस्तुत शोध पत्र, मथुरा, 1992, पृ. 3–4.

42 एपिग्राफिका इण्डिका, भाग–26, पृ. 25.

43 एपिग्राफिका इण्डिका, भाग–19, पृ. 18.

44 एपिग्राफिका इण्डिका, भाग–4, पृ. 279.

45 एपिग्राफिका इण्डिका, पूर्वोधृत, पृ. 56, पाद टिप्पणी 4.

46 तिवारी, गोरेलाल, पूर्वोधृत, पृ. 32.

47 कनिंघम, आर्क्योलोजिकल सर्वे रिपोर्ट्स, पुनर्मुद्रित, 2000, भाग–21, पृ. 22.

चन्देल शासक यशोवर्मन ने इस पर आधिपत्य स्थापित किया।[48] सत्ता संघर्ष के उस युग में धार्मिक महत्व के केन्द्र से राजनीतिक सत्ता का केन्द्र बने।[49] कालिंजर के पर्वतीय दुर्ग पर आधिपत्य को सामरिक दृष्टि से बड़ा ही प्रतिष्ठापूर्ण माना गया। कालिंजर विजय के परिणामस्वरूप ही चन्देल राजवंश की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुयी तथा उसकी गणना एक शक्तिशाली राजवंश के रूप में होने लगी।[50] कनिंघम ने दुर्ग को प्रथम शताब्दी में निर्मित माना है।[51] जबकि फरिश्ता का मत है कि यह दुर्ग सातवीं शताब्दी में किसी केदार नामक राजा का बनवाया हुआ है। टॉलमी इसे कंगोर का दुर्ग मानते है।[52] ग्यारहवी शताब्दी के पश्चात् छुट–पुट रचनाओं को छोड़कर इस दुर्ग में किसी बड़ी रचना या परिवर्तन के संकेत नहीं मिलते है। पहाड़ी ऊँचाई पर प्रस्तर खण्डों से निर्मित विशाल प्राचीर युक्त कालिंजर निःसन्देह एक तीर्थ के रूप में प्राचीन काल से विख्यात था परन्तु राजनैतिक चेतना का केन्द्र कब बना इस पर विद्वानों में मतभेद है। भूगोलवेत्ता राजेन्द्र सिंह ने राजमार्गों के विकास के आधार पर कालिंजर में राजनैतिक शक्ति की स्थापना का समय ईसा के बाद तीसरी शताब्दी मानते है।[53] राजेन्द्र सिंह ने अपने शोध कार्यों से यह प्रमाणित किया है कि सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड क्षेत्र के दुर्ग दुर्गनगरों के रूप में विकसित हुये।[54] बी. भट्टाचार्य ने राजनैतिक चेतना तथा नगरीकरण के लिये सांस्कृतिक चेतना को जिम्मेदार माना है।[55] अहसान आवारा बाँदवी का मत है कि कालिंजर प्राचीन में एक 'मुकद्दस' जगह थी जो तीसरी शताब्दी ई. में राजनैतिक चेतना का केन्द्र बनी। प्रारम्भिक तौर पर कल्चुरियों ने कालिंजर पर अधिकार किया परन्तु कालिंजर का राजनैतिक महत्व चन्देलों के शासनकाल में सामने आया। मध्यकालीन फारसी तवारीखें कालिंजर को एक सशक्त राजनैतिक केन्द्र के रूप में मान्यता देती है। कुतुबुद्दीन ऐबक के समकालीन इतिहासकार हसन निजामी ने कालिंजर पर दुर्ग के स्थापत्य की प्रशंसा करते हुये इसे भारत में बेजोड़ बताया है।[56] इसी प्रकार आरिफ कन्धारी ने इसे हिन्दूस्तान का मजबूत एवं ऊँचा किला बताया साथ ही इसकी ऊँचाई बादलों के बराबर बतायी।[57] अकबर के दरबारी लेखक शेख अबुल फजल अल्लामी ने कालिंजर की भूरि–भूरि प्रशंसा की है।[58] ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद ने अकबर के सेनापति मजनू खां ककशाल द्वारा कालिंजर अभियान (1569) का विस्तृत विवरण दिया गया है।[59] मध्यकाल की महिला इतिहासकार मुलबदन बेगम ने कालिंजर दुर्ग के राजनैतिक

---

48 एपिग्राफिया इण्डिका, भाग–1, पृ. 126–128.

49 सिंह, राजेन्द्र, पूर्वोधृत, पृ. 4.

50 मित्रा, एस. के. पूर्वोधृत, पृ. 37.

51 तिवारी, गोरेलाल, पूर्वोधृत, पृ. 40.

52 राय, बी. एन. पूर्वाधृत, पृ. 11.

53 सिंह, राजेन्द्र, "बुन्देलखण्ड : ए ट्रेडीशनल लैण्ड ऑफ फोर्ट काम्प्लेक्स, द डेक्कन ज्योग्राफर, वाल्यूम–32, 1994, पृ.3.

54 सिंह, राजेन्द्र, "कालिंजर : ए कारीडोर ऑफ अरबन इनवायरमेन्ट इन बुन्देलखण्ड, पृ. 4.

55 भट्टाचार्य, बी. 'अरबन डेवलपमेन्ट इंडिया', श्री पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1979, पृ. 1.

56 हसन निजामी, 'ताजुल–मआसिर', एम. एस. एफ. 185–बी, उदधृत – इलियट एवं हासन, "हिस्ट्री ऑफ इंडिया ए टोल्ड बाई इट्स ऑन हिस्टोरियन्स', खण्ड–2, लन्दन, 1869, पृ. 231–232.

57 आरिफ कन्धारी, 'तारीखे अकबरी' सम्पा. मुइनुद्दीन नदवी, अजहर अली देहलवी, इम्त्याज अली अरसी, रामपुर, 1962.

58 अबुल फजल, आइन–ए–अकबरी, सम्पा. – आगा अहमद अली, एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, कलकत्ता, खण्ड–1, 1948, पृ. 488–499.

59 ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद, तबकात–ए–अकबरी, अनु. बृजेन्द्रनाथ, दिल्ली, 1991, खण्ड–2, पृ. 356–57.

महत्व पर प्रकाश डाला है।[60] अफगान शासक शेरशाह सूरी का कालिंजर अभियान मध्यकालीन इतिहास की प्रमुख घटनाओं में है जिससे कालिंजर का राजनैतिक महत्व प्रकाशित होता है।[61] अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रो. एस. अली नदीम रिजवी ने कालिंजर के राजनैतिक महत्व पर इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस के अमृतसर अधिवेशन में 2002 में "द मेडिवेल फोर्ट ऑफ कालिंजर एण्ड इट्स हिस्ट्री' शीर्षक से शोध पत्र पढ़ा। कालिंजर के राजनैतिक महत्व को प्रकाशित करने के साथ–साथ दुर्ग स्थापत्य के सभी पहलुओं का मूल्यांकन करना समीचीन होगा।

कालिंजर दुर्ग बाँदा तथा पन्ना जिले की सीमा पर तरहटी गांव के समीप तथा प्राचीन राजमार्ग से सर्म्पकित है यद्यपि मध्यकाल से यह स्थल राजमार्ग से विरत हो गया।[62] तरहटी शब्द यह निष्पादित करता है कि यह गांव पहाड़ की तलहटी पर है। कालिंजर दुर्ग के नीचे स्थल पर छोटी बस्ती है। राजेन्द्र सिंह का मानना है कि दुर्ग स्थल पर किसी भी शासनकाल में बड़ी बस्ती का विकास नहीं हो सका, क्योंकि लगातार युद्ध की सम्भावनाओं के कारण सुरक्षा भाव से पहाड़ी स्थित दुर्ग पर सेना तथा सामान्य जन शरण लेते थे तथा पहाड़ी के निचले मैदान पर बड़ी बस्ती का विकास सम्भव नहीं हुआ। दूसरे शब्दों में ऊँचे स्थलों पर बने दुर्ग कभी बड़े नगर के रूप में विकसित नहीं हो सके। कालिंजर दुर्ग बाँदा (बुन्देलखण्ड) के सर्वाधिक प्राचीन दुर्गों की तुलना में अभी तक सर्वाधिक सुरक्षित है।

---

60 गुलबदन बेगम, हुमायूँनामा, सम्पा. ए. एस. वेबरीज, आर. ए. एस., लन्दन, रायल एशियाटिक सोसायटी, 1902, पृ. 22.

61 अब्बास खाँ, सरवानी, तोहफा–ए–अकबरशाही, पटना, 1962, पृ. 200.

62 सिंह, राजेन्द्र, 'इवोल्यूशन ऑफ रुट्स इन बुन्देलखण्ड (यू.पी. : ए स्टडी इन हिस्टोरिकल ज्योग्राफी', द डेक्कन ज्योग्राफर, वाल्यूम – XXVII) जुलाई–दिसम्बर, 1989, पुणे, पृ. 545.